MVS FOUNDATION

FREE NOTES

ECONOMICS (214)

CHAPTERWISE NOTES

ECONOMICS

Sl. No.	Module	Chapters (Public Examination)	Marks
1	Module 1: Understanding Economics	**L-3:** Goods and Services	7
2	Module 5: Money, Banking and Insurance	**L-14:** Money and Its Role **L-15:** Banking and Credit	10
3	Module 7: Indian Economy	**L-20:** Sectoral Aspects of Indian Economy **L-22:** Indian Economy in the Global Context	20
4	Module 8: Contemporary Economic Issues	**L-23:** Environment and Sustainable Development **L-24:** Consumer Awareness	15

Component	Details	Marks
Public Exam (Selected Module 1,5,7,8)	Total Chapters : 7	52
Practical Exam	Practical	0
TMA	Tutor Marked Assignment	20
Final Possible Marks		**72 Marks**

विषय- सूची

1	वस्तुएँ और सेवाएँ
2	मुद्रा और उसकी भूमिका
3	बैंकिंग और साख
4	भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रीय पहलू
5	भारतीय अर्थव्यवस्था – विश्व के संदर्भ में
6	पर्यावरण तथा धारणी विकास
7	उपभोक्ता जागरूकता

1

वस्तुएँ और सेवाएँ

परिचय

मनुष्य की आवश्यकताएँ असीमित होती हैं और उनकी संतुष्टि के लिए **वस्तुओं और सेवाओं** की आवश्यकता होती है। वस्तुएँ और सेवाएँ विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के माध्यम से प्राप्त होती हैं और अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

वस्तुएँ और सेवाएँ

- दैनिक जीवन में मनुष्य अनेक **वस्तुओं** और **सेवाओं** का उपयोग करता है।
- **वस्तुएँ** और **सेवाएँ** दोनों ही मानव आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं।
- भोजन, कपड़े, घर, मशीन आदि वस्तुएँ आवश्यकताओं को पूरा करती हैं।
- डॉक्टर, दर्जी, नाई, मोची आदि द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएँ भी आवश्यकताओं को पूरा करती हैं।
- इसलिए मानव आवश्यकताओं की संतुष्टि में **वस्तुओं और सेवाओं दोनों का योगदान होता है।**

वस्तुओं और सेवाओं में भेद

वस्तुएँ

- वस्तुएँ **दृश्य** होती हैं, इन्हें देखा और छुआ जा सकता है।
- इनके **उत्पादन और उपभोग** के बीच समय का अंतर होता है।
- वस्तुओं का **संग्रह** किया जा सकता है।
- वस्तुओं को **एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित** किया जा सकता है।

सेवाएँ

- सेवाएँ **अदृश्य** होती हैं, इन्हें देखा या छुआ नहीं जा सकता।
- इनके **उत्पादन और उपभोग** के बीच कोई समय अंतर नहीं होता।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- सेवाओं का **संग्रह नहीं किया जा सकता**।
- सेवाओं का **हस्तांतरण संभव नहीं होता**।

वस्तुओं और सेवाओं का वर्गीकरण

वस्तुओं और सेवाओं को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है—

- **निःशुल्क वस्तुएँ और आर्थिक वस्तुएँ**
- **निःशुल्क सेवाएँ और आर्थिक सेवाएँ**
- **उपभोक्ता वस्तुएँ और उत्पादक वस्तुएँ**
- **उपभोक्ता सेवाएँ और उत्पादक सेवाएँ**
- **एकल उपयोगी वस्तुएँ तथा दीर्घोपयोगी वस्तुएँ**
- **निजी वस्तुएँ तथा सार्वजनिक वस्तुएँ**

1. निःशुल्क वस्तुएँ और आर्थिक वस्तुएँ

निःशुल्क वस्तुएँ: वे वस्तुएँ जो प्रकृति द्वारा प्राप्त होती हैं और जिनकी आपूर्ति मांग से अधिक होती है, उन्हें निःशुल्क वस्तुएँ कहते हैं।

मुख्य बिंदु

- प्रकृति का उपहार होती हैं।
- प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती हैं।
- इनके लिए कीमत नहीं चुकानी पड़ती।

आर्थिक वस्तुएँ: वे वस्तुएँ जिनकी आपूर्ति सीमित होती है और जिन्हें प्राप्त करने के लिए कीमत चुकानी पड़ती है, उन्हें आर्थिक वस्तुएँ कहते हैं।

मुख्य बिंदु

- मानव निर्मित या प्रकृति प्रदत्त हो सकती हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- इनकी मांग आपूर्ति से अधिक होती है।
- इन्हें बाजार से खरीदना पड़ता है।

2. निःशुल्क सेवाएँ और आर्थिक सेवाएँ

निःशुल्क सेवाएँ: वे सेवाएँ जो प्रेम, स्नेह और सामाजिक संबंधों के आधार पर दी जाती हैं, उन्हें निःशुल्क सेवाएँ कहते हैं।

आर्थिक सेवाएँ: वे सेवाएँ जिन्हें बाजार में खरीद-बेच किया जाता है और जिनके लिए भुगतान करना पड़ता है, उन्हें आर्थिक सेवाएँ कहते हैं।

3. उपभोक्ता वस्तुएँ और उत्पादक वस्तुएँ

उपभोक्ता वस्तुएँ: वे वस्तुएँ जो सीधे मानव आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं, उन्हें उपभोक्ता वस्तुएँ कहते हैं।

उत्पादक वस्तुएँ: वे वस्तुएँ जो अन्य वस्तुओं के उत्पादन में सहायता करती हैं, उन्हें उत्पादक वस्तुएँ कहते हैं।

(क) मध्यवर्ती वस्तुएँ

वे वस्तुएँ जो अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में उपयोग की जाती हैं, उन्हें मध्यवर्ती वस्तुएँ कहते हैं।

4. उपभोक्ता सेवाएँ तथा उत्पादक सेवाएँ

उपभोक्ता सेवाएँ

वे सेवाएँ जिनका उपयोग सीधे उपभोक्ता या परिवार द्वारा किया जाता है, उन्हें उपभोक्ता सेवाएँ कहते हैं।

उत्पादक सेवाएँ

परिभाषा: वे सेवाएँ जो वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में सहायता करती हैं, उन्हें उत्पादक सेवाएँ कहते हैं।

5. एकल उपयोगी और दीर्घोपयोगी वस्तुएँ

एकल उपयोगी वस्तुएँ: वे वस्तुएँ जिनका उपयोग केवल एक बार किया जा सकता है, उन्हें एकल उपयोगी वस्तुएँ कहते हैं।

दीर्घोपयोगी वस्तुएँ:वे वस्तुएँ जिनका उपयोग लंबे समय तक बार-बार किया जा सकता है, उन्हें दीर्घोपयोगी वस्तुएँ कहते हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

6. निजी और सार्वजनिक वस्तुएँ

निजी वस्तुएँ: वे वस्तुएँ जिनका स्वामित्व किसी व्यक्ति विशेष के पास होता है और जिनका उपयोग वही करता है, उन्हें निजी वस्तुएँ कहते हैं।

सार्वजनिक वस्तुएँ: वे वस्तुएँ जिनका स्वामित्व पूरे समाज का होता है और जिनका उपयोग सभी लोग कर सकते हैं, उन्हें सार्वजनिक वस्तुएँ कहते हैं।

अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की भूमिका तथा महत्व

1. मानव आवश्यकताएँ

- मानव आवश्यकताएँ असीमित होती हैं।
- वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता बढ़ने से आवश्यकताओं की पूर्ति अधिक होती है।

2. उत्पादन

- उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता **उत्पादक वस्तुओं और सेवाओं** पर निर्भर करती है।
- बेहतर मशीनें, कच्चा माल और सेवाएँ उत्पादन बढ़ाती हैं।

3. निवेश

- वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि से **निवेश** बढ़ता है।
- उत्पादन का बचा हुआ भाग भविष्य के उत्पादन में उपयोग होता है।
- इससे अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता बढ़ती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. वस्तुएँ क्या हैं?

उत्तर- वस्तुएँ वे चीजें हैं जिन्हें देखा और छुआ जा सकता है तथा जो मानव आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। इनके उत्पादन और उपभोग के बीच समय का अंतर होता है और इन्हें संग्रहित किया जा सकता है।

प्रश्न-2. सेवाएँ क्या हैं?

उत्तर- सेवाएँ वे कार्य हैं जो मानव आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, लेकिन उन्हें देखा या छुआ नहीं जा सकता। इनके उत्पादन और उपभोग के बीच समय का अंतर नहीं होता और इन्हें संग्रहित नहीं किया जा सकता।

प्रश्न-3. आर्थिक वस्तुएँ क्या होती हैं?

उत्तर- आर्थिक वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जिनकी आपूर्ति सीमित होती है और जिन्हें प्राप्त करने के लिए कीमत चुकानी पड़ती है। ये मानव निर्मित या प्रकृति प्रदत्त दोनों प्रकार की हो सकती हैं।

प्रश्न-4. उपभोक्ता वस्तुएँ किसे कहते हैं?

उत्तर- वे वस्तुएँ जो सीधे उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं, उन्हें उपभोक्ता वस्तुएँ कहते हैं। इनका उपयोग अंतिम उपभोग के लिए किया जाता है।

प्रश्न-5. अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं का महत्व क्या है?

उत्तर- वस्तुएँ और सेवाएँ मानव आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। इनके माध्यम से उत्पादन, निवेश और आर्थिक विकास संभव होता है तथा अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2

मुद्रा और उसकी भूमिका

परिचय

आज के आर्थिक जीवन में **मुद्रा** अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वस्तुओं और सेवाओं के क्रय-विक्रय के लिए मुद्रा का उपयोग किया जाता है। पहले वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित थी, परन्तु उसकी समस्याओं के कारण मुद्रा का विकास हुआ।

वस्तु विनिमय प्रणाली

वस्तु के बदले वस्तु या सेवा का आदान-प्रदान वस्तु विनिमय प्रणाली कहलाता है।

- प्राचीन काल में लोग **वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय** करके अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे।
- इस प्रणाली में **मुद्रा का प्रयोग नहीं होता था**।
- एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु का आदान-प्रदान किया जाता था।

मुद्रा की आवश्यकता

- आधुनिक समय में वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित नहीं है।
- आज वस्तुओं और सेवाओं के क्रय-विक्रय के लिए **मुद्रा का उपयोग** किया जाता है।
- वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयों के कारण मुद्रा की आवश्यकता उत्पन्न हुई।

वस्तु विनिमय प्रणाली के दोष

1. आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कमी

- विनिमय तभी संभव होता है जब दोनों व्यक्तियों को एक-दूसरे की वस्तु की आवश्यकता हो।
- ऐसी स्थिति हमेशा संभव नहीं होती।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2. वस्तुओं के विभाजन की कमी

- कुछ वस्तुओं को छोटे-छोटे भागों में विभाजित नहीं किया जा सकता।
- इससे विनिमय करना कठिन हो जाता है।

3. मूल्य मापन की सामान्य इकाई का अभाव

- वस्तुओं के मूल्य को मापने के लिए कोई सामान्य इकाई नहीं होती।
- इसलिए विभिन्न वस्तुओं का मूल्य निर्धारित करना कठिन होता है।

4. संग्रह की समस्या

- भविष्य में विनिमय के लिए वस्तुओं को बड़ी मात्रा में संग्रहित करना पड़ता है।
- यह कार्य कठिन और असुविधाजनक होता है।

5. मूल्य संचय की कठिनाई

- कई वस्तुएँ नाशवान होती हैं।
- इसलिए उन्हें लंबे समय तक संग्रहित नहीं किया जा सकता।

मुद्रा की परिभाषा और कार्य

मुद्रा वह वस्तु है जिसे समाज द्वारा सामान्य रूप से विनिमय के माध्यम, मूल्य मापन, क्रय शक्ति संचय और भविष्य के भुगतान के लिए स्वीकार किया जाता है।

मुद्रा के कार्य

1. विनिमय का माध्यम

- मुद्रा वस्तुओं और सेवाओं के **क्रय-विक्रय का माध्यम** होती है।
- इससे व्यापार करना आसान हो जाता है।

2. मूल्य का मापन

- मुद्रा वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को **मापने की सामान्य इकाई** का कार्य करती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- सभी वस्तुओं की कीमत मुद्रा में व्यक्त की जाती है।

3. क्रय शक्ति का संचय

- मुद्रा को भविष्य के लिए **संग्रहित** किया जा सकता है।
- इससे व्यक्ति भविष्य में वस्तुएँ और सेवाएँ खरीद सकता है।

4. भविष्य में भुगतान का मानक

- मुद्रा का उपयोग **ऋण और भविष्य के भुगतान** के लिए किया जाता है।
- इसलिए यह भविष्य के भुगतान का मानक बनती है।

मुद्रा के प्रकार

कागजी मुद्रा और सिक्के

- पहले समय में लोग सोने, चाँदी और अन्य वस्तुओं को मुद्रा के रूप में उपयोग करते थे।
- आज मुद्रा मुख्य रूप से **कागजी नोट और सिक्कों** के रूप में प्रयोग होती है।

कागजी मुद्रा

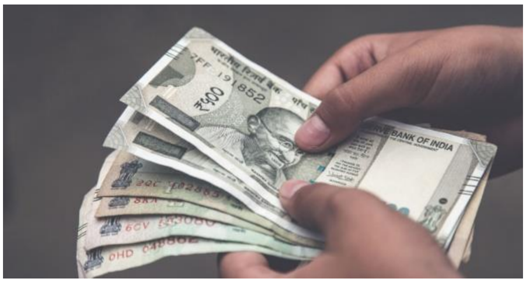

- सरकार द्वारा जारी किए गए नोट **कागजी मुद्रा** कहलाते हैं।
- इन्हें **करेंसी नोट** कहा जाता है।

सिक्के

- छोटे मूल्य के लिए उपयोग किए जाने वाले धातु के टुकड़े **सिक्के** कहलाते हैं।

- इन्हें **पैसे** कहा जाता है।
- भारत में प्रचलित मुद्रा **रुपया** है जिसका चिह्न **₹** है।
- प्रत्येक देश की अपनी अलग मुद्रा होती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. वस्तु विनिमय प्रणाली क्या है?

उत्तर- वस्तु विनिमय प्रणाली वह प्रणाली है जिसमें वस्तुओं और सेवाओं का आदान-प्रदान सीधे वस्तुओं के बदले किया जाता है। इस प्रणाली में मुद्रा का उपयोग नहीं होता और व्यापार वस्तु के बदले वस्तु के आधार पर होता है।

प्रश्न-2. वस्तु विनिमय प्रणाली के दो दोष लिखिए।

उत्तर- वस्तु विनिमय प्रणाली के प्रमुख दोष हैं – आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कमी और वस्तुओं के विभाजन की कठिनाई। इसके कारण विनिमय करना कठिन हो जाता है और व्यापार में असुविधा उत्पन्न होती है।

प्रश्न-3. मुद्रा की परिभाषा दीजिए।

उत्तर- मुद्रा वह वस्तु है जिसे समाज द्वारा सामान्य रूप से विनिमय के माध्यम, मूल्य मापन, क्रय शक्ति के संचय तथा भविष्य के भुगतान के लिए स्वीकार किया जाता है।

प्रश्न-4. मुद्रा के कोई दो कार्य लिखिए।

उत्तर- मुद्रा के मुख्य कार्य हैं – विनिमय का माध्यम और मूल्य का मापन। इसके माध्यम से वस्तुओं और सेवाओं का क्रय-विक्रय आसान होता है तथा वस्तुओं के मूल्य को सामान्य इकाई में व्यक्त किया जा सकता है।

प्रश्न-5. कागजी मुद्रा क्या है?

उत्तर- सरकार द्वारा जारी किए गए नोट जिन्हें वस्तुओं और सेवाओं के क्रय-विक्रय के लिए प्रयोग किया जाता है, उन्हें कागजी मुद्रा कहा जाता है। इन्हें सामान्यतः करेंसी नोट कहा जाता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

3

बैंकिंग और साख

परिचय

आधुनिक अर्थव्यवस्था में **मुद्रा और बैंकिंग** एक-दूसरे के पूरक हैं। बैंक लोगों की अतिरिक्त मुद्रा को सुरक्षित रखते हैं और जरूरतमंद लोगों को ऋण प्रदान करते हैं। इस प्रकार बैंक उत्पादन, वितरण और व्यापारिक गतिविधियों को सुगम बनाते हैं।

बैंक और बैंकिंग का अर्थ

बैंक: बैंक एक संस्था है जो जनता से **जमा के रूप में मुद्रा स्वीकार करती है और लोगों को ऋण देती है।**

बैंकिंग: बैंकिंग का अर्थ है लोगों से जमा स्वीकार करना और उसे ऋण या निवेश के रूप में उपयोग करना, जिसे आवश्यकता पड़ने पर चेक, ड्राफ्ट आदि द्वारा निकाला जा सके।

बैंक के कार्य

बैंक के मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं:

- **जनता से जमा स्वीकार करना**
- **ऋण देना**

जनता से जमा स्वीकार करना

- बैंक व्यक्तियों, समूहों और व्यावसायिक संस्थाओं से **मुद्रा के रूप में जमा स्वीकार करता है।**
- बैंक जमा करने वाले के नाम से **खाता खोलता है।**
- खाते को एक **खाता संख्या** दी जाती है।
- आवश्यकता होने पर जमाकर्ता अपने खाते से **मुद्रा निकाल सकता है।**
- कुछ प्रकार की जमा पर बैंक **ब्याज** देता है।
- बैंक जमाकर्ताओं को **चेकबुक** प्रदान करता है जिससे भुगतान किया जा सकता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

ऋण देना

- बैंक उन लोगों को **ऋण देता है** जिन्हें धन की आवश्यकता होती है।
- ऋण उन्हीं व्यक्तियों को दिया जाता है जिनमें भविष्य में **ऋण चुकाने की क्षमता** होती है।
- लोग वस्तुएँ खरीदने या व्यवसाय शुरू करने के लिए ऋण लेते हैं।
- बैंक व्यापार और आर्थिक गतिविधियों के लिए ऋण उपलब्ध कराता है।

कीमती सामान रखना

- बैंक लोगों की **कीमती वस्तुएँ** सुरक्षित रखने की सुविधा देता है।
- बैंक यह सुविधा **लॉकर सेवा** के रूप में प्रदान करता है।
- इसमें आभूषण, दस्तावेज आदि सुरक्षित रखे जा सकते हैं।

साख का अर्थ

- **साख** से अभिप्राय भविष्य में भुगतान प्राप्त करने के **दावे** से है।
- जब बैंक किसी व्यक्ति को ऋण देता है तो बैंक **ऋणदाता** और ऋण लेने वाला **ऋणी** कहलाता है।
- बैंक भविष्य में ऋणी से भुगतान प्राप्त करने का अधिकार रखता है।
- बैंक ऋण देकर अपनी जमा राशि में वृद्धि करता है।
- इसी प्रक्रिया को **साख का सृजन** कहा जाता है।

साख सृजन की प्रक्रिया

- बैंक जनता से **जमा स्वीकार** करता है।
- जमा का कुछ भाग बैंक **नकद के रूप में सुरक्षित** रखता है।
- शेष राशि को बैंक **ऋण के रूप में प्रदान** करता है।
- ऋण देने से बैंक में **नई जमा का निर्माण** होता है।
- इस प्रकार बैंक की कुल जमा राशि बढ़ती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

साख सृजन के चरण

- बैंक में प्रारंभिक जमा से **नई जमा उत्पन्न** होती है।
- बैंक जमा का एक भाग **नकद आरक्षण अनुपात** के रूप में रखता है।
- शेष राशि को **ऋण के रूप में दिया जाता है।**
- प्रत्येक चरण में जमा और ऋण की प्रक्रिया चलती रहती है।
- इससे बैंक में **कुल साख में वृद्धि** होती है।

बैंक की साख सृजन क्षमता

- बैंक की साख सृजन क्षमता **नकद आरक्षण अनुपात** पर निर्भर करती है।
- यदि नकद आरक्षण अनुपात **अधिक** होगा तो साख सृजन **कम** होगा।
- यदि नकद आरक्षण अनुपात **कम** होगा तो साख सृजन **अधिक** होगा।

भारत में विभिन्न प्रकार के बैंक

भारत में निम्न प्रकार के बैंक होते हैं:

- **भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI)**
- **व्यावसायिक बैंक**
- **सहकारी बैंक**
- **विकास बैंक**

भारतीय रिज़र्व बैंक

- **भारतीय रिज़र्व बैंक** देश की बैंकिंग प्रणाली का **शीर्ष बैंक** है।
- इसका मुख्य कार्यालय **मुंबई** में है।
- यह **करेंसी नोट जारी** करता है।
- यह सरकार के **बैंकर** के रूप में कार्य करता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- सरकार की जमा राशि इसी बैंक में रखी जाती है।

व्यावसायिक बैंक

- ये बैंक जनता से **जमा स्वीकार** करते हैं और **ऋण प्रदान करते हैं।**
- इनका उद्देश्य बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करके **लाभ कमाना** होता है।
- ये बैंक **धन का हस्तांतरण, ड्राफ्ट जारी करना** आदि सेवाएँ देते हैं।

सहकारी बैंक

- सहकारी समितियों द्वारा संचालित बैंक **सहकारी बैंक** कहलाते हैं।
- ये दो प्रकार के होते हैं:
  - **कृषि (ग्रामीण) बैंक**
  - **गैर-कृषि (शहरी) बैंक**
- ग्रामीण क्षेत्रों में ये **कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन** आदि के लिए साख प्रदान करते हैं।
- शहरी क्षेत्रों में ये **स्वरोजगार और छोटे उद्योगों** के लिए ऋण प्रदान करते हैं।

विकास बैंक

- विकास बैंक देश के **आर्थिक विकास** के लिए कार्य करते हैं।
- ये उद्योगों और आधारभूत संरचना के लिए **दीर्घकालीन ऋण** प्रदान करते हैं।
- ये निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों को ऋण उपलब्ध कराते हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. बैंक क्या है?

उत्तर- बैंक एक संस्था है जो जनता से जमा के रूप में धन स्वीकार करती है और जरूरतमंद लोगों को ऋण प्रदान करती है। बैंक आर्थिक गतिविधियों को सुगम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रश्न-2. बैंक के दो मुख्य कार्य लिखिए।

उत्तर- बैंक के दो मुख्य कार्य हैं – जनता से जमा स्वीकार करना और लोगों को ऋण देना। इन कार्यों के माध्यम से बैंक व्यापार और आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करता है।

प्रश्न-3. साख क्या है?

उत्तर- साख से अभिप्राय भविष्य में भुगतान प्राप्त करने के दावे से है। जब बैंक किसी व्यक्ति को ऋण देता है तो वह भविष्य में उस राशि को वापस प्राप्त करने का अधिकार रखता है।

प्रश्न-4. साख सृजन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- जब बैंक जमा राशि का एक भाग सुरक्षित रखकर शेष राशि को ऋण के रूप में प्रदान करता है और इससे नई जमा उत्पन्न होती है, तो इस प्रक्रिया को साख सृजन कहा जाता है।

प्रश्न-5. भारत में कौन-कौन से प्रकार के बैंक हैं?

उत्तर- भारत में मुख्य रूप से चार प्रकार के बैंक हैं – भारतीय रिज़र्व बैंक, व्यावसायिक बैंक, सहकारी बैंक और विकास बैंक। ये सभी बैंक देश की बैंकिंग प्रणाली को संचालित करते हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4

भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रीय पहलू

परिचय

भारतीय अर्थव्यवस्था में लोग विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन और उपभोग करते हैं। इन गतिविधियों को उनके स्वरूप के आधार पर अलग-अलग क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है। मुख्य रूप से अर्थव्यवस्था के तीन क्षेत्र होते हैं- प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र।

लोगों के द्वारा अपनाये जाने वाले व्यवसायों के प्रकार

- लोग अपनी शिक्षा, कौशल और पारिवारिक परंपरा के अनुसार विभिन्न व्यवसाय अपनाते हैं।
- इन व्यवसायों को अर्थव्यवस्था के तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जाता है:
    - **प्राथमिक क्षेत्र**
    - **द्वितीयक क्षेत्र**
    - **तृतीयक क्षेत्र**

प्राथमिक क्षेत्र

- यह क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित होता है।
- इसमें उत्पादन सीधे प्रकृति से प्राप्त संसाधनों से होता है।

प्राथमिक क्षेत्र में शामिल गतिविधियाँ

- कृषि तथा संबंधित क्रियाकलाप
- मत्स्य पालन
- वानिकी
- खनन तथा उत्खनन

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

द्वितीयक क्षेत्र

इस क्षेत्र में निम्नलिखित उत्पादन गतिविधियाँ शामिल हैं:

- **विनिर्माण**
- **निर्माण**
- **गैस, जल तथा बिजली आपूर्ति**

विनिर्माण

- कच्चे माल का उपयोग करके वस्तुओं का उत्पादन करना विनिर्माण कहलाता है।
- यह गतिविधि कारखानों और उद्योगों में होती है।
- उद्योग दो प्रकार के होते हैं:
    - **लघु उद्योग**
    - **बड़े पैमाने के उद्योग**

निर्माण

इस गतिविधि में भवन, सड़क, पुल, पार्क, बांध आदि का निर्माण किया जाता है।

गैस, जल तथा बिजली आपूर्ति

ये आवश्यक सेवाएँ हैं जो उत्पादन और जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

तृतीयक क्षेत्र

- इसे सेवा क्षेत्र भी कहा जाता है।
- इसमें विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।

तृतीयक क्षेत्र की प्रमुख सेवाएँ:

- व्यापार, होटल तथा जलपान गृह
- परिवहन, भंडारण तथा संचार

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- वित्तीय सेवाएँ (बैंकिंग, बीमा आदि)
- स्थावर संपत्ति तथा व्यावसायिक सेवाएँ
- लोक प्रशासन
- अन्य सेवाएँ

प्राथमिक क्षेत्र की भूमिका एवं महत्व

1. राष्ट्रीय आय में अंश

- स्वतंत्रता के समय राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान 50% से अधिक था।
- वर्ष 2009-10 में लगभग 15% था।

2. जनसंख्या के बड़े भाग को रोजगार

- कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है।
- वर्ष 2009-10 में लगभग 50% जनसंख्या कृषि में कार्यरत थी।

3. लाखों को भोजन प्रदान करना

- भोजन मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकता है।
- कृषि के माध्यम से खाद्यान्न का उत्पादन और आपूर्ति होती है।

4. उद्योगों को कच्चा माल प्रदान करना

- अनेक उद्योगों को कच्चा माल कृषि से प्राप्त होता है।
- इससे उद्योगों का विकास संभव होता है।

द्वितीयक क्षेत्र की भूमिका तथा महत्व

1. राष्ट्रीय आय में अंश

- वर्ष 2009-10 में औद्योगिक क्षेत्र का योगदान 28% था।
- स्वतंत्रता के समय यह लगभग 14% था।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2. रोजगार का सृजन

- उद्योगों ने बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार प्रदान किया है।
- लघु और बड़े उद्योग दोनों रोजगार उपलब्ध कराते हैं।

3. आधारभूत संरचना का सृजन

सड़क, रेलवे, हवाई अड्डे, बांध आदि का निर्माण औद्योगिक क्षेत्र के कारण संभव हुआ है।

4. उपभोक्ता वस्तुओं का प्रावधान

कपड़े, जूते, साबुन, साइकिल, स्कूटर, कार आदि का उत्पादन उद्योगों में होता है।

सेवा क्षेत्र की भूमिका तथा महत्व

- भारत में सेवा क्षेत्र का विस्तार तेजी से हो रहा है।
- परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, होटल आदि सेवाएँ इस क्षेत्र का भाग हैं।

सेवा क्षेत्र के प्रमुख योगदान

- राष्ट्रीय आय में योगदान
- रोजगार प्रदान करना
- विदेशी निवेश आकर्षित करना
- निर्यात में योगदान

सेवा क्षेत्र का राष्ट्रीय आय में योगदान

- वर्ष **2009-10 में सेवा क्षेत्र का योगदान 55.2%** था।
- यह तीनों क्षेत्रों में सबसे अधिक है।

सेवा क्षेत्र के प्रमुख उपक्षेत्र

- व्यापार और होटल
- परिवहन और संचार

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- वित्तीय और व्यावसायिक सेवाएँ
- सामाजिक तथा अन्य सेवाएँ

रोजगार प्रदान करने में योगदान

- वर्ष **2009-10 में लगभग 29.4% रोजगार** सेवा क्षेत्र में था।
- शिक्षित लोगों को इस क्षेत्र में अधिक रोजगार मिलता है।

विदेशों से निवेश आकर्षित करना

- बैंकिंग, बीमा, व्यापार आदि सेवाओं में विदेशी निवेश बढ़ रहा है।
- इससे रोजगार और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

निर्यात में योगदान

- सेवा क्षेत्र के माध्यम से देश विदेशी मुद्रा अर्जित करता है।
- वर्ष **2009-10 में लगभग 4.35 लाख करोड़ रुपये** सेवा निर्यात से प्राप्त हुए।

अर्थव्यवस्था के तीनों क्षेत्रों में संबंध

- अर्थव्यवस्था के **तीनों क्षेत्र एक-दूसरे से जुड़े होते हैं।**
- ये एक-दूसरे के **पूरक और सहायक** हैं।
- कृषि उद्योगों को कच्चा माल देती है।
- उद्योग उपभोक्ता वस्तुएँ और मशीनें प्रदान करते हैं।
- सेवा क्षेत्र दोनों क्षेत्रों के बीच **व्यापार, परिवहन और वित्तीय सेवाएँ** उपलब्ध कराता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. अर्थव्यवस्था के तीन क्षेत्र कौन-से हैं?

उत्तर- अर्थव्यवस्था के तीन मुख्य क्षेत्र हैं – प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र और तृतीयक क्षेत्र। इन तीनों क्षेत्रों के माध्यम से वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन तथा वितरण होता है।

प्रश्न-2. प्राथमिक क्षेत्र में कौन-कौन सी गतिविधियाँ शामिल हैं?

उत्तर- प्राथमिक क्षेत्र में कृषि, मत्स्य पालन, वानिकी तथा खनन और उत्खनन जैसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं। ये गतिविधियाँ सीधे प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित होती हैं।

प्रश्न-3. द्वितीयक क्षेत्र क्या है?

उत्तर- द्वितीयक क्षेत्र वह क्षेत्र है जिसमें कच्चे माल को संसाधित करके नई वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। इसमें विनिर्माण उद्योग, निर्माण कार्य तथा गैस, जल और बिजली आपूर्ति जैसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं।

प्रश्न-4. तृतीयक क्षेत्र को सेवा क्षेत्र क्यों कहा जाता है?

उत्तर- तृतीयक क्षेत्र में वस्तुओं का उत्पादन नहीं होता बल्कि विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। जैसे व्यापार, परिवहन, बैंकिंग, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ।

प्रश्न-5. अर्थव्यवस्था के तीनों क्षेत्रों में संबंध कैसे होता है?

उत्तर- अर्थव्यवस्था के तीनों क्षेत्र एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। कृषि उद्योगों को कच्चा माल देती है, उद्योग उपभोक्ता वस्तुएँ बनाते हैं और सेवा क्षेत्र व्यापार, परिवहन तथा वित्तीय सेवाओं के माध्यम से दोनों क्षेत्रों को जोड़ता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

5

भारतीय अर्थव्यवस्था - विश्व के संदर्भ में

परिचय

भारत विश्व के अनेक देशों में से एक है और अन्य देशों के साथ इसके आर्थिक संबंध होते हैं। वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान, व्यापार, निवेश और यात्रा के माध्यम से देश आपस में जुड़े रहते हैं। इस अध्याय में भारत और विश्व के बीच आर्थिक संबंधों का अध्ययन किया गया है।

देशों के बीच आर्थिक संबंध का अर्थ

आर्थिक संबंध

जब दो या अधिक देशों के नागरिकों के बीच **वस्तुओं, सेवाओं, मुद्रा या अन्य आर्थिक गतिविधियों का आदान-प्रदान** होता है, तो इसे **आर्थिक संबंध** कहते हैं।

आर्थिक संबंधों के प्रमुख रूप

- **निर्यात** – घरेलू नागरिकों द्वारा विदेशी नागरिकों को वस्तुएँ और सेवाएँ बेचना।
- **आयात** – विदेशी देशों से वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदना।
- विदेशों को **मुद्रा भेजना या प्राप्त करना**।
- विदेशी देशों की **यात्रा या व्यापारिक संपर्क**।
- जब किसी देश के अन्य देशों के साथ आर्थिक संबंध होते हैं तो उसे **खुली अर्थव्यवस्था** कहा जाता है।

व्यापार का महत्व

व्यापार:

वस्तुओं और सेवाओं की **खरीद-फरोख्त की प्रक्रिया** को व्यापार कहते हैं।

व्यापार के प्रमुख लाभ

- व्यापार से लोगों को **विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ और सेवाएँ** प्राप्त होती हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- व्यापार **नई वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन को प्रोत्साहित** करता है।
- विभिन्न देशों के लोगों के बीच **संपर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान** बढ़ता है।
- व्यापार से **विशेषीकरण** संभव होता है जिससे उत्पादन कम लागत पर होता है।
- इससे वस्तुएँ **कम कीमत पर उपलब्ध** हो जाती हैं।

भारत द्वारा निर्यात और आयात

- भारत के विश्व के अनेक देशों के साथ आर्थिक संबंध हैं।
- भारत अनेक वस्तुओं का **निर्यात** और **आयात** करता है।
- जिन देशों के साथ भारत व्यापार करता है उन्हें **व्यापारिक साझेदार** कहा जाता है।

(क) भारत के निर्यात

भारत जिन प्रमुख वस्तुओं का निर्यात करता है: इंजीनियरिंग का सामान, हस्तशिल्प, रसायन और संबंधित उत्पाद, सिले हुए कपड़े, सूती धागा, लोहा-अयस्क, चमड़ा, मछलियाँ, चावल, फल और सब्जियाँ

भारत जिन देशों को निर्यात करता है- फ्रांस, जर्मनी, यू.के., यू.एस.ए., ईरान, यू.ए.ई., चीन, हांगकांग, सिंगापुर, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देश

(ख) भारत के आयात

भारत जिन प्रमुख वस्तुओं का आयात करता है-

- **पेट्रोलियम**
- **खनिज तेल**
- **अलौह धातुएँ**
- **पूंजीगत वस्तुएँ**
- **मशीनें और परिवहन उपकरण**
- **उर्वरक**

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

भारत का आयात मुख्यतः उन्हीं देशों से होता है जिनके साथ उसका निर्यात व्यापार भी होता है।

वैश्वीकरण का अर्थ

वैश्वीकरण

वह प्रक्रिया जिसमें **विश्व के विभिन्न देश आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी रूप से एक-दूसरे से अधिक जुड़े हुए हो जाते हैं**, उसे वैश्वीकरण कहते हैं।

वैश्वीकरण के कारण

- **परिवहन के साधनों का विकास**
- **संचार तकनीक का विकास**
- **अंतरराष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि**
- देशों के बीच **संपर्क और सहयोग** बढ़ना
- वैश्वीकरण के कारण विश्व एक **वैश्विक गाँव** की तरह प्रतीत होता है।

भारत, चीन और यू.एस.ए. में आर्थिक विकास की तुलना

- विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में **भारत, चीन और यू.एस.ए.** महत्वपूर्ण हैं।
- इन देशों की आर्थिक स्थिति और विकास स्तर अलग-अलग है।

यू.एस.ए. की अर्थव्यवस्था का एक संक्षिप्त लेखा-जोखा

- यू.एस.ए. विश्व के सबसे **विकसित देशों** में से एक है।
- यहाँ **निजी क्षेत्र** उत्पादन में प्रमुख भूमिका निभाता है।
- विश्व की कई बड़ी कंपनियाँ यू.एस.ए. में स्थित हैं।
- यू.एस.ए. **कृषि उत्पादन** में भी उन्नत है।
- यह विश्व के प्रमुख **निर्यातकों और आयातकों** में से एक है।
- शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ उच्च स्तर की हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- इसके बावजूद वहाँ **गरीबी और बेरोजगारी** भी पाई जाती है।

चीन की अर्थव्यवस्था

- चीन की अर्थव्यवस्था विश्व की **दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था** मानी जाती है।
- 1980 के बाद चीन की अर्थव्यवस्था में तेज विकास हुआ।
- चीन ने आर्थिक सुधारों के माध्यम से **निजी क्षेत्र को बढ़ावा** दिया।
- चीन बड़े पैमाने पर **निर्यात** करता है और विदेशी मुद्रा अर्जित करता है।
- चीन की राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय **भारत से तेज गति से बढ़ी है**।
- गरीबी कम करने में चीन ने उल्लेखनीय प्रगति की है।

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. आर्थिक संबंध से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- जब दो या अधिक देशों के नागरिकों के बीच वस्तुओं, सेवाओं, मुद्रा या अन्य आर्थिक गतिविधियों का आदान-प्रदान होता है, तो इसे आर्थिक संबंध कहा जाता है।

प्रश्न-2. निर्यात और आयात क्या हैं?

उत्तर- विदेशी देशों को वस्तुएँ और सेवाएँ बेचना **निर्यात** कहलाता है। विदेशी देशों से वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदना **आयात** कहलाता है।

प्रश्न-3. व्यापार का एक महत्व लिखिए।

उत्तर- व्यापार के माध्यम से लोगों को विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ और सेवाएँ प्राप्त होती हैं। इससे उत्पादन बढ़ता है और देशों के बीच आर्थिक तथा सांस्कृतिक संबंध मजबूत होते हैं।

प्रश्न-4. वैश्वीकरण क्या है?

उत्तर- वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें विश्व के विभिन्न देश आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी रूप से एक-दूसरे से अधिक जुड़े हुए हो जाते हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न-5. चीन की अर्थव्यवस्था की एक विशेषता लिखिए।

उत्तर- चीन की अर्थव्यवस्था में 1980 के बाद तेज आर्थिक विकास हुआ। आर्थिक सुधारों और बड़े पैमाने पर निर्यात के कारण चीन विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

6

पर्यावरण तथा धारणी विकास

परिचय

वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया जाता है। कई बार उत्पादन की प्रक्रिया के कारण पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। इसलिए संसाधनों के संरक्षण और भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए **धारणी (सतत) विकास** आवश्यक माना जाता है।

पर्यावरण : परिभाषा तथा महत्व

परिभाषा

पृथ्वी पर प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली सभी जीवित और निर्जीव वस्तुओं का समुच्चय पर्यावरण कहलाता है।

पर्यावरण के घटक

जैव घटक: पक्षी, पशु, पौधे, वन

अजैव घटक: वायु, जल, चट्टान, सूर्य

पर्यावरण का महत्व

- पर्यावरण मनुष्य को **नवीकरणीय तथा अनवीकरणीय संसाधन** प्रदान करता है।
- पर्यावरण **हानिकारक अपशिष्ट पदार्थों को आत्मसात** करता है।
- पर्यावरण **जैव विविधता के माध्यम से जीवन को बनाए रखता है**।
- पर्यावरण **सौंदर्य तथा सांस्कृतिक महत्व** भी प्रदान करता है।

पर्यावरण संबंधी समस्याएँ

- मानव सभ्यता के विकास के साथ **प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग** हुआ है।
- इससे कई **पर्यावरणीय समस्याएँ** उत्पन्न हुई हैं:

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- प्रदूषण
- भूमि का निम्नीकरण
- प्राकृतिक आवास का निम्नीकरण
- संसाधनों का क्षय

प्रदूषण

प्राकृतिक संसाधनों या प्राकृतिक तंत्र की गुणवत्ता में अवांछनीय परिवर्तन को प्रदूषण कहते हैं।

प्रदूषक

वह अपशिष्ट पदार्थ जो प्राकृतिक संसाधनों की गुणवत्ता को प्रभावित करता है, प्रदूषक कहलाता है।

वायु प्रदूषण

वायु में हानिकारक गैसों, कणों या रासायनिक पदार्थों की उपस्थिति को **वायु प्रदूषण** कहते हैं।

वायु प्रदूषण के स्रोत

- ऊर्जा संयंत्रों और कारखानों से निकलने वाला धुआँ
- वाहनों से निकलने वाली गैसें
- रासायनिक पदार्थ और कृषि गतिविधियाँ
- रंग-रोगन, स्प्रे और अन्य रसायन
- कचरे के ढेर से निकलने वाली गैसें

प्राकृतिक स्रोत

- धूल
- जंगली आग
- ज्वालामुखी गतिविधियाँ

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

जल प्रदूषण

जल प्रदूषण : जल स्रोतों में हानिकारक पदार्थों के मिल जाने से जल की गुणवत्ता में कमी आना **जल प्रदूषण** कहलाता है।

जल प्रदूषण के स्रोत

- नगरों से निकलने वाला मल-जल
- कारखानों का औद्योगिक अपशिष्ट
- कृषि भूमि से बहने वाले रसायन
- वर्षा के साथ बहकर आने वाला प्रदूषित जल
- तेल का रिसाव

जल प्रदूषण के प्रभाव

- हैजा, टाइफाइड, अतिसार जैसी बीमारियाँ
- जलीय जीवों की मृत्यु
- प्राकृतिक खाद्य श्रृंखला में बाधा

ध्वनि प्रदूषण

ध्वनि प्रदूषण : अत्यधिक और अप्रिय ध्वनि जो मानव या पशु जीवन को प्रभावित करे **ध्वनि प्रदूषण** कहलाती है।

ध्वनि प्रदूषण के स्रोत

- मोटर वाहन और यातायात
- औद्योगिक गतिविधियाँ
- निर्माण कार्य
- घरेलू उपकरण
- उपभोक्ता उपकरण

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव

- चिड़चिड़ापन
- उच्च रक्तचाप
- तनाव
- बहरापन
- नींद में बाधा

निम्नीकरण

भूमि निम्नीकरण : भूमि की गुणवत्ता में हानिकारक परिवर्तन को **भूमि निम्नीकरण** कहते हैं।

भूमि निम्नीकरण के कारण

- रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग
- अधिक सिंचाई और जल निकास की समस्या
- पशुओं द्वारा अत्यधिक चराई

भूमि निम्नीकरण के प्रभाव

- भूमि की उत्पादन क्षमता कम हो जाती है।
- भूजल प्रदूषित हो सकता है।
- जैव विविधता में कमी आती है।
- भूमि धीरे-धीरे बंजर हो जाती है।

प्राकृतिक आवास का निम्नीकरण

मानव गतिविधियों के कारण प्राकृतिक आवास की गुणवत्ता में कमी आना **प्राकृतिक आवास का निम्नीकरण** कहलाता है।

प्रमुख कारण

- वनों की कटाई

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- कृषि भूमि का विस्तार
- शहरीकरण
- भूमि का कटाव
- जंगलों को जलाना

प्रभाव

- जैव विविधता में कमी
- खाद्य श्रृंखला में असंतुलन
- कई प्रजातियों का लुप्त होना
- प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि

संसाधनों का क्षय

संसाधन क्षय: किसी क्षेत्र में **कच्चे माल या प्राकृतिक संसाधनों की कमी** को संसाधनों का क्षय कहते हैं।

प्रमुख तथ्य

- आधुनिक अर्थव्यवस्था **जीवाश्म ईंधन और खनिजों** पर निर्भर है।
- संसाधनों की मांग तेजी से बढ़ रही है।
- संसाधनों का अत्यधिक उपयोग **पर्यावरणीय समस्याएँ** भी उत्पन्न करता है।

धारणी (सतत) विकास

धारणी विकास

ऐसा विकास जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करे और भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता को प्रभावित न करे, उसे धारणी विकास कहते हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

- प्राकृतिक संसाधनों का **सावधानीपूर्वक उपयोग**

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- आर्थिक विकास और पर्यावरण के बीच **संतुलन**
- भविष्य की पीढ़ियों के हितों की रक्षा

हम धारणी विकास कैसे प्राप्त कर सकते हैं

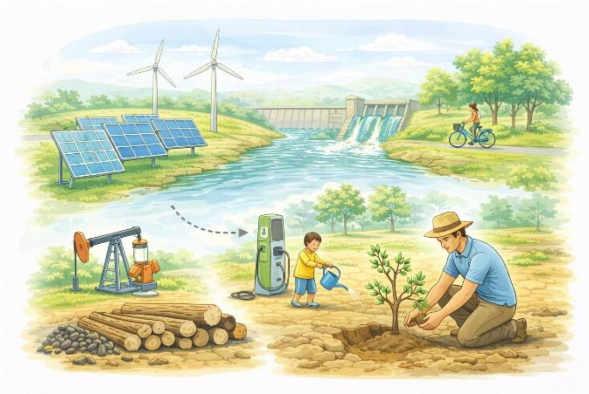

संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग

- अनवीकरणीय संसाधनों के विकल्प ढूँढना
- नवीकरणीय संसाधनों का उपयोग बढ़ाना
- सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल शक्ति आदि का प्रयोग

पुनर्चक्रण

- उपयोग की गई वस्तुओं को **दोबारा संसाधित करके पुनः प्रयोग** करना
- कागज और अन्य वस्तुओं का पुनर्चक्रण

कम उपयोग

- आवश्यक वस्तुओं का ही उपयोग करना
- ऊर्जा और संसाधनों की **बचत** करना

TOP 5 QUETIONS

प्रश्न-1. पर्यावरण से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- पर्यावरण पृथ्वी पर प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली सभी जीवित और निर्जीव वस्तुओं का समुच्चय है। इसमें जैव और अजैव दोनों घटक शामिल होते हैं जो एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।

प्रश्न-2. प्रदूषण क्या है?

उत्तर- प्राकृतिक संसाधनों या प्राकृतिक तंत्र की गुणवत्ता में अवांछनीय परिवर्तन को प्रदूषण कहते हैं। यह परिवर्तन मानव गतिविधियों या प्राकृतिक कारणों से हो सकता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न-3. जल प्रदूषण के दो प्रभाव लिखिए।

उत्तर- जल प्रदूषण से हैजा, टाइफाइड और अतिसार जैसी बीमारियाँ फैल सकती हैं। इसके कारण जलीय जीवों की मृत्यु भी हो सकती है और प्राकृतिक खाद्य श्रृंखला प्रभावित होती है।

प्रश्न-4. भूमि निम्नीकरण से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- भूमि की गुणवत्ता और उत्पादन क्षमता में हानिकारक परिवर्तन को भूमि निम्नीकरण कहा जाता है। इसके कारण भूमि की उर्वरता घट जाती है और भूमि धीरे-धीरे बंजर हो सकती है।

प्रश्न-5. धारणी (सतत) विकास क्या है?

उत्तर- धारणी विकास ऐसा विकास है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करता है और साथ ही भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता को नुकसान नहीं पहुँचाता।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

7

उपभोक्ता जागरूकता

परिचय

लोग अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदते हैं। कई बार वस्तुएँ खराब गुणवत्ता, गलत माप या अनुचित कीमत पर मिलती हैं। इसलिए ऐसी स्थिति में उपभोक्ता को अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों की जानकारी होना आवश्यक है।

उपभोक्ता कौन है

उपभोक्ता: वह व्यक्ति जो वस्तुओं और सेवाओं को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए खरीदता या उपयोग करता है, उपभोक्ता कहलाता है।

- जो व्यक्ति वस्तुएँ **पुनः बिक्री के लिए खरीदता है**, उसे उपभोक्ता नहीं माना जाता।

वस्तुएँ और सेवाएँ क्या हैं

वस्तुएँ : वे उत्पाद जिनका उत्पादन या निर्माण किया जाता है और जिन्हें बाजार में बेचा जाता है, वस्तुएँ कहलाती हैं।

सेवाएँ :

- वे सुविधाएँ जो उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराई जाती हैं, सेवाएँ कहलाती हैं।
- जैसे: बैंकिंग, बीमा, परिवहन, बिजली आपूर्ति, स्वास्थ्य आदि सेवाएँ।

उपभोक्ता जागरूकता

उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों, कर्तव्यों और बाजार की जानकारी होना उपभोक्ता जागरूकता कहलाता है।

उपभोक्ता जागरूकता के मुख्य तत्व

- वस्तु की **गुणवत्ता के बारे में जानकारी**
- विभिन्न **जोखिमों और समस्याओं के बारे में शिक्षा**
- उपभोक्ता के **अधिकारों का ज्ञान**

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- उपभोक्ता के **कर्तव्यों की जानकारी**

उपभोक्ता जागरूकता की आवश्यकता

- बाजार में **वस्तुओं और सेवाओं की विविधता** बढ़ गई है।
- उपभोक्ता और उत्पादक के बीच **भौतिक दूरी** बढ़ गई है।
- विज्ञापनों के माध्यम से कई बार **गलत जानकारी** दी जाती है।
- कई बार **समाप्ति तिथि या आवश्यक जानकारी** स्पष्ट नहीं दी जाती।
- कई उपभोक्ता **बिना बिल के वस्तुएँ खरीद लेते हैं।**
- इससे उपभोक्ता को **शिकायत करने में कठिनाई** होती है।
- इसलिए उपभोक्ता को **जागरूक और सावधान** रहना आवश्यक है।

भारत में उपभोक्ता संरक्षण पद्धति

- भारत में उपभोक्ताओं की सुरक्षा के लिए **कानूनी और प्रशासनिक व्यवस्था** है।
- उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं से संबंधित शिकायतों के लिए **उपभोक्ता न्यायालय** में जा सकते हैं।

सरकारी कानून

भारत में उपभोक्ता संरक्षण के लिए प्रमुख कानून—

- उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम (CPA) 1986
- खाद्य पदार्थ मिलावट निवारण अधिनियम (PFA) 1954
- आवश्यक वस्तु अधिनियम (ECA) 1955
- भार और माप मापक अधिनियम (SWMA) 1976

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की विशेषताएँ

- उपभोक्ताओं को **सस्ता, सरल और त्वरित न्याय** प्रदान करना।
- कम औपचारिक और **कम खर्चीली प्रक्रिया**।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- सभी वस्तुओं और सेवाओं पर लागू।

उपभोक्ताओं की शिकायतों को निपटाने वाली संस्थाएँ

भारत में उपभोक्ता संरक्षण के लिए दो प्रकार की संस्थाएँ हैं—

- **सरकारी परिषदें**
- **उपभोक्ता न्यायालय**

सरकारी परिषदें

- **केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण परिषद (CCPC)**
- **राज्य उपभोक्ता संरक्षण परिषद (SCPC)**

उपभोक्ता न्यायालय

भारत में उपभोक्ता न्यायालय तीन स्तर पर होते हैं-

- **जिला उपभोक्ता फोरम (DCF)**
- **राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (SCDRC)**
- **राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (NCDRC)**

संरक्षण प्रणाली

- उपभोक्ता अपनी शिकायत **लिखित रूप में** दर्ज कर सकता है।
- शिकायत **स्वयं या वकील के माध्यम से** की जा सकती है।
- वस्तु के मूल्य के आधार पर उचित न्यायालय का चयन किया जाता है।

शिकायत कैसे की जाए

- खरीद की **रसीद या बिल** होना चाहिए।
- शिकायत में समस्या का **स्पष्ट विवरण** देना चाहिए।
- आवश्यक दस्तावेज **शिकायत के साथ संलग्न** किए जाते हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- शिकायत की **तीन प्रतियाँ** जमा करनी होती हैं।
- निर्धारित **शुल्क का भुगतान** करना होता है।

गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका

- कई **NGO** उपभोक्ताओं की सहायता करते हैं।
- ये संगठन उपभोक्ताओं को **शिक्षा, सलाह और सहायता** प्रदान करते हैं।
- उपभोक्ता अधिकारों के बारे में **जागरूकता कार्यक्रम** आयोजित किए जाते हैं।

शिकायत करने के आधार

- **सेवा में कमी**
- **दोषपूर्ण वस्तु**
- **अनुचित व्यापार व्यवहार**
- **गुणवत्ता में कमी**

उपभोक्ताओं के अधिकार

उपभोक्ताओं को निम्न अधिकार प्राप्त हैं-

सूचना का अधिकार

- उपभोक्ता को वस्तु के बारे में **सही और पूर्ण जानकारी** प्राप्त करने का अधिकार है।
- इसमें कीमत, वजन, निर्माण तिथि, समाप्ति तिथि आदि शामिल हैं।

चुनाव का अधिकार

- उपभोक्ता को **वस्तुओं और सेवाओं के बीच स्वतंत्र रूप से चयन** करने का अधिकार है।

सुरक्षा का अधिकार

- उपभोक्ता को ऐसी वस्तुओं से **सुरक्षा का अधिकार** है जो स्वास्थ्य और जीवन के लिए हानिकारक हों।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

सुने जाने का अधिकार

- उपभोक्ता की शिकायत को **उचित मंच पर सुना जाना** चाहिए।

संरक्षण प्राप्त करने का अधिकार

- यदि उपभोक्ता को नुकसान हुआ है तो उसे **मुआवजा प्राप्त करने का अधिकार** है।

उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार

- उपभोक्ताओं को अपने **अधिकारों और कर्तव्यों की जानकारी प्राप्त करने का अधिकार** है।

उपभोक्ताओं के उत्तरदायित्व

विज्ञापनों से सावधान रहना

- उपभोक्ताओं को **भ्रामक विज्ञापनों से सावधान** रहना चाहिए।

गुणवत्ता प्रमाणित वस्तुएँ खरीदना

- **ISI, AGMARK, BIS** जैसे प्रमाण चिन्ह वाली वस्तुएँ खरीदनी चाहिए।

खरीद का बिल लेना

- वस्तु खरीदते समय **बिल अवश्य लेना चाहिए।**
- बिल शिकायत करने के लिए **महत्वपूर्ण प्रमाण** होता है।

हरित उपभोक्ता बनना

- पर्यावरण को नुकसान न पहुँचाने वाली वस्तुओं का **उपयोग करना चाहिए।**

उपभोक्ता प्रबंधक के रूप में भूमिका

- उपभोक्ता अपनी आवश्यक सेवाओं के लिए **संगठित होकर कार्य कर सकते हैं।**

भारत में उपभोक्ता आंदोलन के प्रमुख विषय

- भारत में उपभोक्ता आंदोलन को सफल बनाने के लिए **जागरूकता बढ़ाना आवश्यक है।**
- ग्रामीण क्षेत्रों में **उपभोक्ता शिक्षा का प्रसार** जरूरी है।
- उपभोक्ताओं को **समय पर न्याय** मिलना चाहिए।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUETIONS

प्रश्न-1. उपभोक्ता कौन है?

उत्तर- वह व्यक्ति जो वस्तुओं और सेवाओं को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए खरीदता या उपयोग करता है, उपभोक्ता कहलाता है। जो व्यक्ति वस्तुएँ पुनः बिक्री के लिए खरीदता है उसे उपभोक्ता नहीं माना जाता।

प्रश्न-2. उपभोक्ता जागरूकता क्या है?

उत्तर- उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों, कर्तव्यों और बाजार से संबंधित जानकारी होना उपभोक्ता जागरूकता कहलाता है। इससे उपभोक्ता अपने हितों की रक्षा कर सकते हैं।

प्रश्न-3. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम का उद्देश्य क्या है?

उत्तर- उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम का उद्देश्य उपभोक्ताओं को सस्ता, सरल और त्वरित न्याय प्रदान करना तथा उनके अधिकारों की रक्षा करना है।

प्रश्न-4. उपभोक्ता के दो अधिकार लिखिए।

उत्तर- उपभोक्ता के प्रमुख अधिकार हैं-सूचना का अधिकार और सुरक्षा का अधिकार। इन अधिकारों के माध्यम से उपभोक्ता सही जानकारी प्राप्त कर सकता है और हानिकारक वस्तुओं से सुरक्षा पा सकता है।

प्रश्न-5. उपभोक्ता का एक उत्तरदायित्व लिखिए।

उत्तर- उपभोक्ता का एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व वस्तु खरीदते समय बिल लेना है। बिल खरीद का प्रमाण होता है और आवश्यकता पड़ने पर शिकायत करने में सहायक होता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/